Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. VII, Issue No. XIV, April-2014, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

सूर के आराध्य राम

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. VII, Issue No. XIV, April-2014, ISSN 2230-7540

सूर के आराध्य राम

Dr. (Smt.) Bijender

Lecturer in Hindi

----------X----------

महाकवि सूरदास हिन्दी साहित्य में कृष्ण काव्यधारा के सर्वाधिक प्रमुख कवि माने जाते हैं। परन्तु एक कवि होने से पूर्व वे एक सच्चे भक्त थे। साहित्य के विद्वान सूरदास को भले ही महान साहित्यकार कहते हों, परंतु भक्त उन्हें भक्तराज के रूप में आज भी याद करते हैं। जब कभी सूर का कवि के रूप में विवेचन किया जाता है तो पाठक उनके श्रृंगार तथा वात्सल्य रस को पढ़कर मुग्ध हो जाते हैं। परन्तु अपने आराध्य के प्रति उनकी भक्ति की तल्लीनता भी पाठकों को गद्‌गद् कर देती है।

''करतल सोभित बान–अनुहियाँ।

खेलत फिरत कनकमय आँगन, पहिरें लाल पनहियाँ।।

दसरथ–कौसिल्या के आगे, लसत सुमन की छहियाँ।

मानौ चारि हंस सरबर तें, बैठे आई सदेहियाँ।।

गग गग गग

सूरदास हरि बोलि भक्त कौं, निरबाहत गहि बहियाँ।।''[1]

सूर सर्वप्रथम भक्त हैं और अपने आराध्य के प्रति सम्पूर्ण समर्पण ही उनकी भक्ति का मूल–मंत्र है। कृष्ण हो अथवा राम दोनों ही उनके लिए एक ही परमब्रह्म के प्रतीक हैं। उनका कवि हृदय अहर्निश उसी ब्रह्मलोक में विचरण करता रहता है। काव्य के माध्यम से सरस–भाव–भक्ति की अभिव्यक्ति ही उनकी जीवनदायिनी शक्ति है। यही उनके भक्त हृदय की ऊर्जा भी है। फलतः कृष्ण हो या राम, उन्होंने उनके श्रृंगार और वात्सल्य रस में अवगाहन करने का सम्पूर्ण आनंद उठाया है।

'सूर रामचरितावली' में भी उनकी भक्ति–भावना के वैसे ही दृश्य के दर्शन होते हैं। गीता प्रेस, गोरखपुर ने 'सूर–रामचरितावली' को प्रकाशित करके स्तुत्य कार्य किया है। पुस्तक का संपादन विद्वान श्री सुदर्शन सिंह जी ने किया है। इसमें 'सूर सागर' के 199 और 'सूरसारावली' के 13 पदों का संग्रह है। कुल मिलाकर 212 पदों को संग्रहित किया गया है। 'सूरसागर' की सबसे प्राचीन हस्तलिखित प्रति कांकरौली में श्री शोभाराम जी द्वारा लिखित प्राप्त हुई है। इस प्रति में भगवान राम से संबंधित सूर विरचित कुछ ऐसे पद मिले हैं जो 'सूरसागर' की अन्य उपलब्ध प्रतियों में नहीं हैं। सूर की रामभक्ति–भावना को इस पुस्तक ने साकार कर दिया है और शोधार्थियों के लिए भी यह उपलब्ध सामग्री परम उपयोगी सिद्ध हुई है। कृष्णभक्त सूर ने अपने आराध्य के वात्सल्य और श्रृंगार के दृश्यों को अत्यंत जीवन्त करके उभारा है। उन पदों को पढ़ने से प्रतीत होता है कि कृष्ण भारतीय समाज के घर–आंगन के बालक हैं। उनकी श्रृंगार–लीलाओं को पढ़कर जन–मानस स्वयं को उसमें समाहित कर देता है। भक्त कवि सूर को श्रीराम के वात्सल्य और श्रृंगार–लीलाओं को चित्रित करने में वैसी ही सफलता मिली है। सूर ने अपने गुरु स्वामी वल्लभाचार्य द्वारा दिखाए गए 'पुष्टि–मार्ग' की भक्ति का अनुसरण किया है। पुष्टि–मार्ग–भक्ति में सख्य–भाव की प्रधानता होती है। कृष्ण पुरुषोत्तम है और गोपियाँ जीवात्माएँ हैं। भगवान की कृपा को 'पुष्टि' की संज्ञा दी गई है। 'पुष्टि' की प्राप्ति से भवसागर पार करने की यात्रा सरल हो जाती है – 'पुष्टि मार्ग कौ जहाजु'। यही सूर की रामभक्ति का भी रहस्य है। सूर के राम उनके परम आराध्य श्रीकृष्ण से भिन्न नहीं हैं।

सूर की राम–भक्ति का रहस्य साम्प्रदायिक सामंजस्य भी है। राम–भक्ति और कृष्ण–भक्ति का एक पुनीत संगम है। संत तुलसीदास जी ने भी 'श्रीकृष्ण गीतावली' की रचना की है। 'विनय–पत्रिका' में भी उन्होंने सभी देवी–देवताओं की महिमा का गुणगान किया है। श्रीमद्‌भागवत के नवम् स्कंध में श्रीरामचरित का दो अध्यायों में वर्णन उपलब्ध है। सूर की रामभक्ति–भावना का वही आधार स्तंभ है।

सख्य–भाव की भक्ति में भक्त और भगवान एक–दूसरे से अत्यन्त समीप हो जाते हैं। भगवान के प्रति भक्त एक ओर समर्पित होता है तो दूसरी ओर भगवान भी सखा–भाव के वशीभूत होकर भक्त के साथ क्रीड़ारत हो जाते हैं। 'सूर रामचरितावली' में भी सूर भगवान के साथ बाल–क्रीड़ा का ऐसा ही अपूर्व आनंद–रस प्राप्त करते हैं। सूर ने राम की लीलाओं का वर्णन मुक्तक के माध्यम से किया है। तुलसी और वाल्मीकि की रामकथा के जैसा प्रबंध–काव्य का स्वरूप वहाँ देखने को नहीं मिलता है। मुक्तक–काव्य–रचना में सूर सिद्धस्त ही नहीं है अपितु उसके माध्यम से वे कम से कम शब्दों में प्रभु की बाल–लीला और श्रृंगार–लीला का वर्णन करते हुए रस–सागर में रसासिक्त भी हो जाते हैं। यह सूर के काव्य–कौशल की विलक्षणता है। यही सूर की मौलिकता, सहजता, रसात्मकता, संवेदनशीलता, भावात्मकता और हृदय–स्पर्शिता से सराबोर भक्ति का रहस्य भी है। पाठक भक्त कवि सूरदास के साथ उसकी भाव–तन्मयता में एकाकार होकर सहज ही सुध–बुध खो बैठता है –

''कर कपै कंकन नहिं छूटै ।

राम–सिया–कर परस मगन भए,

कौतुक निरखि सखि सुख लूटै।।''[2]

www.ignited.in

सूर ने कंकन–मोचन प्रसंग को कितना हृदय ग्राही बना दिया है। यही सूर की निजी विशेषता है।

'सूर रामचरितावली' में केवल 212 पद हैं, फिर भी सूर ने मंगलाचरण अवतार की परिकल्पना, धनुष–भंग–प्रसंग, परशुराम–प्रसंग, कैकेयी–प्रसंग, मंथरा–प्रसंग, सूर्पणखा–प्रसंग, हनुमान–सीता–मिलन–प्रसंग आदि के अत्यन्त रोचक वर्णन प्रस्तुत किए हैं। इन प्रसंगों में वात्सल्य, श्रृंगार और भक्ति की इतनी मनोहारी छवियाँ देखने को मिलती हैं कि पाठकों के हृदय–प्राण सहज ही समर्पित हो जाते हैं। वस्तुतः सूर ने राम के हृदय के कोने–कोने से झांक–झांक कर दिखलाया है। उनके राम भक्तों के अन्नदाता हैं।

विजय पार्षदों को विप्र–श्राप के कारण हिरण्याक्ष और हिरण्यकशिपु तथा फिर रावण और कुंभकरण के रुप में अवतरित होना पड़ा है। उनके वध का वर्णन सूर ने बड़े रोचक ढ़ंग से किया हैं। यथा –

''हरि–हरि, हरि–हरि सुमिरन करौ, हरि चरनारविंद उर धरौ।।

जय अरु विजय पार्षद दोइ। विप्र–सराप असुर भइ सोइ ।।

एक बराह रुप धरि मार्‌यौ । इक नरसिंह रुप संहार्‌यौ ।।

रावण–कुंभकरन सोइ भए । राम जनम तिनकैं हित लए।।

दशरथ नृपति अजोध्या–राव । ताके गृह कियो आविरभाव ।।

नृप सौं ज्यों सुकदेव सुनायौ । 'सूरदास' त्यौं ही कहि गायौ ।।[3]

सूर ने रामकथा और राम के आदर्श चरित्र की समस्त मर्यादाओं का पालन किया है। रावण और कुंभकरण के अत्याचारों से पीड़ित पृथ्वी गौ रुप धारण कर उद्‌धार हेतु प्रार्थना करती है। ब्रह्मा तथा अन्य देवतागण कातर पृथ्वी को देखकर द्रवीभूत हो उठते हैं। पृथ्वी, देवता और ब्रह्मा क्षीरसागर में विश्राम कर रहे विष्णु के पास जाते हैं। विष्णु नर रुप में अवतार धारण करने का आश्वासन देते हैं।

एक दूसरे प्रसंग में भगवान शंकर माता पार्वती से श्री राम–जन्म की कथा का उल्लेख करते हैं। सूर ने समस्त प्रसंगों को मुक्तक–माध्यम से ही अत्यन्त मनोहारी छवि प्रदान करते हुए प्रस्तुत किया है। राम–विवाह, सीता स्वयंवर और परशुराम–प्रसंग का चित्रण तो हृदयग्राही है, साथ ही मर्यादित भी –

''क्रोधवंत कछु सुन्यौ नहीं, लियौ सायक धनुष चढ़ाई ।

तब हूँ रघुपति कोप न कीन्हौ, धनुष वान संभार्‌यौ ।

'सूरदास' प्रभु–रुप समुझि, बन परसुराम पग धार्‌यौ।।''[4]

कैकेयी–प्रसंग में भी सूर ने समस्त मर्यादाओं का पालन किया है। उनके काव्य–कौशल में एक ओर मुक्तक कथन शैली की मौलिकता है तो दूसरी ओर राम के दैवी स्वरूप और मर्यादा सम्पन्न तथा अपरिमित शक्ति से युक्त चरित्रवान गुणों का भी दिग्दर्शन है। कैकेयी के द्वारा 'रामवनवास' का उल्लेख और राम की पितृ–भक्ति एवं मातृ–भक्ति दर्शनीय है–

''सकुचनि कहत नहीं महाराज।

चौदह वर्ष तुम्हें वन दीन्हों, मम सुत कौं निज राज।।

पितु–आयुसु सिर–धरि रघुनायक, कौसिल्या ढिंग आए।

सीस नाइ वन–आज्ञा मांगी, सुनत 'सूर' दुख पाए।।''[5]

सूर ने प्रभु राम के दर्शन मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान के रुप में ही किए हैं। श्रृंगार–वर्णन के उन्हें अधिक अवसर नहीं मिले हैं। रस–सिद्‌ध सूर श्रृंगार–वर्णन के अवसर पाते ही रस–विभोर हो उठते हैं – 'राम–सिया–कर परस मगन भए'। पति पत्नी के स्पर्श–सुख का यह मनोहारी चित्रण है। सूर का भक्त हृदय 'स्पर्श–सुख' के सुख–सागर में डूबने–उतरने लगा है –

''यह सुख निरखि मुदित सुर–नर–मुनि 'सूरदास' बलि जाई।''[6]

सूर मानव–मनोविज्ञान की गहनतम (गहराई) में झांक–झांक कर मानव–मन और मानवीय संवेदनाओं को निरखते–परखते रहे हैं। गाँव की नर–नारियों के सहज–सरल–स्वभाव के वे कुशल पारखी हैं। वन में वनवासिनी नारियाँ, सीता, राम और लक्ष्मण की लावण्यमयी मूर्तियों को देखकर असमंजस में पड़ जाती हैं। जानना चाहती हैं – वे कौन हैं? कहाँ से आए हैं? क्यों आए हैं?

''सखी री ! कौन तिहारे जात।

राजिब नैन धनुष कर लीन्हें, बदन मनोहर गात।।

लज्जित होहिं पुरवधु पूछैं, अंग–अंग मुसकात।।

अति मृदु चरन पंथ बन बिहरत, सुनियत अद्‌भुत बात।।

सुंदर तन, सुकुमार दोउ जन, सूर–किरन कुम्हिलात।

देखि मनोहर तीनों मूरति, त्रिबिध–ताप जन–जात।।''[7]

तुलसी की सीता आभिजात्य गरिमा से परिपूर्ण है। सूर की सीता में भाव विचार की सहजता है तथा स्वभाव की सरलता भी है। ग्राम–वधुएँ उनके लिए सखी–सहेली जैसी प्रतीत होती हैं। सूर की सीता उन्हीं के मानसिक धरातल पर उतरकर उत्तर देती है–

''सासु की सौति सुहागिनि सो सखि,

अतिहिं पिय की प्यारी ।

अपने सुत कौं राज दिवायौ,

हमको देस निकारी।।''[8]

सीता के वचन में लाग–लपेट नहीं है। कथन में हृदय–भाव की सहजता है। यथार्थ का बोध है। अभिव्यक्ति की सरलता है। वस्तुतः सूर के सभी राम कथा–पात्र श्रीराम के प्रति ही समर्पित हैं। सूर के राम का व्यक्तित्व ही दैवी व्यक्तित्व है।

सूर के हनुमान भी श्री राम के प्रति सादर समर्पित भक्त हनुमान हैं। इन सभी चित्रणों में सूर का, स्वयं का भक्त–हृदय अभिव्यक्त हो उठा है। सूर के हनुमान का हृदय इस प्रकार राममय हो उठा है कि वे माता सीता को देखकर दुविधा में पड़ जाते हैं –

''सोच लाग्यो करन, यहैं धौं जानकी,

कै कोऊ और, मोहिं महिं चिन्हारा।

'सूर' आकासवानी भई तबै तहँ,

यहै बैदेहि है, करु जोहारा।।''[9]

स्पष्ट है कि भक्ति ही सूर का परम लक्ष्य है। सूर की दृष्टि में रामकथा के समस्त पात्र राममय हैं और राम–भक्त हैं। उन सबके हृदय में परम पद की प्राप्ति और मोक्ष की कामना है। शत्रु, मित्र, माता, पिता, भाई, बन्धु, प्रजा आदि सबके सब श्रीराम–चरण के अभिलाषी हैं। यही उनकी उत्कट इच्छा है। यही सूरदास जी की 'पुष्टि–मार्ग–भक्ति' का सहज–स्वाभाविक स्वरूप है। सूर ने तो रावण को भी भक्त के रुप में चित्रित किया है। त्रिजटा रावण को समझाती है कि पर–नारी को अपने पास रखना पाप है, वह सीता को श्रीराम को सादर समर्पित कर दे। रावण सीता के चरित्र की मर्यादा को भली–भाँति समझता है। वह सीता के पावन चरित्र का भक्ति–भाव से आदर करता है। वह त्रिजटा से कहता है कि 'सीताहरण' उसने अपने उद्धार के लिए किया है। वह अपने अपराध तथा कुकृत्य का दण्ड राम के हाथों पाना चाहता है ताकि उसे संसार–सागर से मुक्ति मिल सके –

''जो सीता सत तैं बिचलै, तौं श्रीपति काहि सँभारै ।

मो से मुग्ध महापापी कौं, कौन क्रोध कर तारै ।।

ये जननी वे प्रभु रघुनन्दन, हौं सेवक प्रतिहार ।

सीता–राम सूर संगम बिनु, कौन उतारे पार ।।''[10]

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि भले ही सूर ने प्रबन्ध–काव्य की रचना नहीं की है, किंतु मुक्तक–काव्य के माध्यम से ही उन्होंने श्री राम को अत्यधिक प्रभावशाली रुप में चित्रित किया है। एक भक्त कवि मुक्तक के माध्यम से हर प्रसंग की मार्मिकता को कितने सहज और स्वाभाविक रुप से व्यक्त कर सकता है, उसका सुंदर समन्वय 'सूर रामचरितावली' में देखने को मिलता है। सूर के राम 'लीला–पुरुष' राम हैं। उनकी लीलाओं के वर्णन में ही सूर की सहज संलिप्तता है। एक और भी विशेषता यह है कि मुक्तक काव्य में आत्माभिव्यक्ति की भूरपूर उपलब्धता प्राप्त होती है और सूर ने उन अवसरों का भक्तिमय लाभ उठाया है। उन्होंने अपने प्रभु राम को एक ओर तो परम आराध्य के रूप में चित्रित किया है तो दूसरी ओर सामान्य जनों के अत्यन्त निकट लाकर खड़ा कर दिया है। उन्होंने प्रभु राम की पुरुषोत्तम छवि, भक्तवत्सल छवि, प्रजापालक छवि और जननायक छवि को और भी निखारा है। सूर का भक्त–हृदय अपने आराध्य राम की इन समस्त लीलाओं का सहभागी बन जाता है और कहता है –

''यह पापी, तुम पतित उधारन, कहाँ बिलवे नाथ।''[11]

संदर्भ सूची

1. 'सूर रामचरितावली' – संपादक श्री सुदर्शन सिंह, पृष्ठ सं0 12
2. 'सूर रामचरितावली' – संपादक श्री सुदर्शन सिंह, पृष्ठ सं0 12
3. 'सूर रामचरितावली' – संपादक श्री सुदर्शन सिंह, मंगलाचरण
4. 'सूर रामचरितावली' – संपादक श्री सुदर्शन सिंह, पृष्ठ सं0 15
5. 'सूर रामचरितावली' – संपादक श्री सुदर्शन सिंह, पृष्ठ सं0 19
6. 'सूर रामचरितावली' – संपादक श्री सुदर्शन सिंह, पृष्ठ सं0 16
7. 'सूर रामचरितावली' – संपादक श्री सुदर्शन सिंह, पृष्ठ सं0 51
8. 'सूर रामचरितावली' – संपादक श्री सुदर्शन सिंह, पृष्ठ सं0 52
9. 'सूर रामचरितावली' – संपादक श्री सुदर्शन सिंह, पृष्ठ सं0 67
10. 'सूर रामचरितावली' – संपादक श्री सुदर्शन सिंह, पृष्ठ सं0 69
11. 'सूर रामचरितावली' – संपादक श्री सुदर्शन सिंह, पृष्ठ सं0 102